वर्ष :: 32 अंक : 50
पृष्ठ : 08 :: मूल्य 2 रुपए मात्र

मिथिला
वर्णन
स्वच्छ पत्रकारिता, स्वस्थ पत्रकारिता

/mithilavarnan

झारखंड-बिहार का लोकप्रिय हिन्दी साप्ताहिक

बोकारो :: रविवार, 18 सितंबर, 2022 News & E-paper : www.varnanlive.com E-mail : mithilavarnan@gmail.com

पूरे परिवार के लिये आध्यात्मिक पत्रिका

अवश्य पढ़ें
निखिल-मंत्र-विज्ञान
14ए, मैनरोड, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)
फोन : (0291) 2624081, 263809

'32 पर '36 का आंकड़ा'!

– : देवेन्द्र शर्मा :–

रांची : झारखंड की महागठबधन की सरकार ने जिस हड़बड़ी में 1932 के खतियान को आधार मानकर स्थानीयता को परिभाषित करते हुए इसे अपने मंत्रिमंडल से पारित किया है, वह स्वयं में विवाद का विषय बनता जा रहा है। सरकार में शामिल घटक दल समेत स्वयं झारखंड मुक्ति मोर्चा के नेताओं को यह स्वीकार नही हो रहा है। कई नेताओं ने तो खुलकर अपना विरोध जता दिया। दूसरे शब्दों में कहें तो '32 के खतियान मामले पर आपस में ही छत्तीस का आंकड़ा होने की स्थिति दिख रही है। राज्य के कई जिलों में अब तक सर्वे का काम पूरा नहीं हो पाया है। कैबिनेट के इस फैसले पर लोगों के बीच खुशी कम और नाराजगी अधिक दिखाई दे रही है। यह जानते हुए कि इस तरह के प्रस्ताव को कुछ समय पूर्व न्यायालय ने खारिज कर दिया था, फिर भी इसे कैबिनेट से पारित कर दिया। इस निर्णय के विरुद्ध पूरे प्रदेश में असंतोष का वातावरण आने वाले समय में सरकार के लिए परेशानी का कारण बनने वाला है।

सरकार पर संकट से उबरने का 'ट्रंप-कार्ड'

सियासी पंडितों की मानें, तो इस प्रस्ताव को पारित कराने के पीछे सरकार की अपनी मंशा है। अपने ऊपर आए संकट से निजात पाने के लिए ही इस प्रस्ताव को लाया गया है। सरकार कुछ समय से गंभीर संवैधानिक संकट से जूझ रही थी। मुख्यमंत्री खुद अपनी सदस्यता बचाने के लिए चिन्तित थे। सरकार में विद्रोह की लहर चल थी। सरकार के गिरने का भय था। सीएम ने खुद सभी सदस्य को लेकर अन्य राज्य में पनाह ले रखी थी। राज्य में असमंजस की स्थिति थी। राज्य के बेरोजगार जहां एक ओर नियुक्ति की मांग कर रहे थे, वहीं दूसरी ओर झामुमो के अंदर भी कलह की स्थिति चरम पर आ गयी थी। कुछ विधायकों ने तो पाला बदलने की जुगत भी भिड़ा ली थी।

सरकार पर चौतरफा हमला शुरू हो गया था। इनसे बचने की राह सरकार को नहीं समझ में आ रही थी। सीएम समेत कैबिनेट के पांच मंत्री पर गंभीर आरोप जांच के दायरे में था। इनसे बचने के लिए और लोगों का ध्यान हटाने के लिए खतियान मामले को सामने लाकर सबों को आपस में ही उलझा दिया। इस विकराल तूफान से बचने के लिए सरकार ने यह जानते हुए कि यब फैसला यह सम्भव नहीं हो पाएगा, उलझाने के लिए यह दांव खेल दिया। सरकार यह जान रही थी कि यह प्रस्ताव पारित नहीं हो पाएगा। इसे **(शेष पेज– 7 पर)**

कांग्रेस आलाकमान ने नहीं भरी हामी

इस प्रस्ताव पर कांग्रेस के कई विधायकों और सांसदों ने भी खुलकर विरोध जताना आरम्भ कर दिया है। राज्य के स्वास्थ्य मंत्री बन्ना गुप्ता ने भी नाराजगी प्रकट की। कांग्रेस की सांसद श्रीमती गीता कोड़ा ने भी खुलकर विरोध शुरू कर दिया है। कांग्रेस के विधायक और सांसद इसका समर्थन खुलकर नहीं कर रहे हैं। आदिवासी समुदाय के बुद्धिजीवी लोगों ने भी विरोध आरम्भ कर दिया है। सरकार ने अपने चुनाव घोषणा-पत्र में नियुक्ति करने की बात की थी, जो सम्भव नहीं हो पा रहा था, इसलिए बेरोजगारों को उलझाने की नीयत से इसे पारित कर दिया। कांग्रेस आलाकमान ने अब तक इस पर हामी नहीं भरी है, वो जानती है कि वह प्रदेश में एक बड़े-धड़े को नाराज नहीं करेगी, क्योंकि यदि ऐसा किया तो उनका वोट बैंक समाप्त हो जायेगा। भाजपा इससे अलग सब देखकर मजे ले रही है। वह जानती है कि सरकार की परेशानी बढ़ने वाली है। अतः वह शांत होकर देख रही है।

दिग्भ्रमित किए जा रहे बेरोजगार?

राज्य में लाखों-लाख बेरोजगारों के बीच यह चर्चा जोरों पर है कि क्या झारखंड सरकार 1932 खतियान प्रस्ताव को लाकर उन्हें दिग्भ्रमित करना चाहिए रही है? यह प्रस्ताव ऐसे समय लाया गया है, जब सरकार ने अपने चुनावी घोषणा-पत्र के अनुसार लोगों को नियुक्ति करने का वचन दिया था। सरकार ने पिछले कुछ माह से अपने सभी विभाग से रिक्त पदों का ब्यौरा मांगा था। सभी विभागों ने अपने-अपने विभाग का ब्यौरा भी जमा किया था। प्रक्रिया आरम्भ होने वाली थी, इसी बीच 1932 खतियान का जिन्न बाहर आ गया। कुछ माह पूर्व से ही सरकार गंभीर संकट से जूझ रही है। कांग्रेस और झामुमो के लगभग एक दर्जन से अधिक विधायक, मंत्री सरकार से नाराज चल रहे थे। उनका आरोप था कि वो जनता से जो वादा करके आये हैं, उन वादों को सरकार पूरा नहीं कर पा रही है। राज्य का विकास अधर में लटका है। वादे के अनुरूप सरकार बेरोजगारों को नौकरी नहीं दे पा रही है। जहां प्रतिवर्ष दो लाख लोगों को नौकरी देनी थी, वह भी अधर में है। इस स्थिति में वो जनता के सामने कैसे जायेंगे? जानकार बताते हैं कि सरकार इस बात को जानती है कि 1932 का खतियान मामला जल्द सुलझने वाला नहीं है। यह कई प्रकियाओं में उलझने वाला है और इस प्रस्ताव को कैबिनेट से पारित कर ला दिया। अब नियुक्ति का मामला तब तक उलझा रहेगा, जब तक इसका कोई ठोस समाधान नहीं हो जाता। तब तक बेरोजगार युवकों की संख्या भी बढ़ती रहेगी। सरकार ठेके पर काम लेकर काम कराती रहेगी। हल्ला और प्रदर्शन पर ठीकरा केन्द्र सरकार के माथे फोड़कर चैन की सांस लेगी।

प्रतिभा बोकारो थर्मल स्थित भाटिया एकेडमी की खिलाड़ी आशा किरण बारला ने बढ़ाया बोकारो जिले का मान

2 मिनट 8.45 सेकेंड में बनाया यूथ नेशनल एथलेटिक्स का नया रिकॉर्ड

नए राष्ट्रीय मीट रिकार्ड के साथ जीता 800 मीटर का स्वर्ण पदक

कुमार संजय

बोकारो थर्मल : बोकारो जिले की खेल प्रतिभा ने एक बार फिर राष्ट्रीय स्तर पर जिले का मान बढ़ाया है। भारतीय एथलेटिक्स संघ, नई दिल्ली द्वारा 17-19 सितंबर को मध्य प्रदेश के टीटी नगर भोपाल में आयोजित 17वें राष्ट्रीय यूथ नेशनल एथलेटिक्स चैंपियनशिप में झारखंड के बोकारो जिला अंतर्गत बोकारो थर्मल स्थित भाटिया एकेडमी की एथलीट आशा किरण बारला ने फाइनल में 2 मिनट 8.45 सेकेंड के साथ यूथ नेशनल एथलेटिक्स का नया रिकार्ड बनाते हुए 800 मीटर बालिका वर्ग में स्वर्ण पदक जीता। साथ ही, आगामी अक्टूबर माह में कुवैत में आयोजित एशियन यूथ एथलेटिक्स चैंपियनशिप के लिए भारतीय टीम के लिए अपनी अहर्ता हासिल कर ली है।

आशा की इस उपलब्धि पर एकेडमी के कोच सह- सचिव आशु भाटिया, बोकारो एथलेटिक्स एसोसिएशन के अध्यक्ष भरत यादव, आशीष झा, डॉ प्रभात शंकर, आलोक मिश्रा, सुखेर भगत, विनोद कुमार सिंह, वरुण कुमार, प्रभाकर वर्मा, अशोक महतो, विजय भाटिया, बिपिन द्विवेदी, गौतम चंद्र पाल, गंगाधर यादव, विनोद सिंह, अशोक भट्टाचार्य समेत जिला के खेल प्रेमियों ने बधाई दी है। सभी ने एकेडमी के कार्यों को सराहनीय बताया है।

संपादकीय

बिहार में महाजंगल राज?

देश की वर्तमान राजनीति में जाति और संप्रदाय आधारित खेल आज एक परिपाटी बन गई है। क्योंकि, यह परम्परा आजादी के बाद से ही चली आ रही है। आजादी के बाद शुरू हुई इस परम्परा को सभी राजनीतिक दल पूरी बेशर्मी के साथ निभाते आ रहे हैं, क्योंकि इस लीक से हटकर वे चल नहीं सकते और अगर चलने की कोशिश की तो फिर सत्ता का सिंहासन उन्हें किसी भी कीमत पर नसीब नहीं होगा। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार तो इस लीक से हटकर चल ही नहीं सकते। चाहे वे भाजपा के साथ रहे हों या अपने पुराने दोस्त लालू प्रसाद के साथ। लालू यादव ने सिर्फ जातिगत आधार पर अपना राजनीतिक खेल खेलते हुए बिहार में 15 वर्षों तक राज किया, जबकि नीतीश तो इस मामले में उनसे भी आगे निकल चुके हैं। शायद इसीलिए उन्होंने बिहार के बेगूसराय में चर्चित गोलीकांड को भी जाति से जोड़ दिया। हालांकि, इस मामले को लेकर उन्होंने जो बयान दिया, उस पर उनकी भद्द पिट गई। लेकिन, उन्होंने आज तक यह स्वीकार नहीं किया है कि बिहार में आज महाजंगल राज है। जबकि, पहले कभी बिहार में लालू राज को जंगलराज का तगमा नीतीश जी ने ही दिया था। सच्चाई यही है कि कुर्सी से चिपके रहने की अपनी पुरानी आदतों की वजह से बेवश नीतीश ने जब भाजपा से दूरी बनाई और राजद व कांग्रेस के सहयोग से फिर मुख्यमंत्री बने तो वह पुरानी सारी बातें भूल गए। उन्होंने पूरी बेशर्मी से बेगूसराय में हुई अंधाधुंध गोलीबारी की घटना को भी जाति से जोड़ दिया, लेकिन पुलिस की लापरवाह कार्यशैली उन्हें कहीं नजर नहीं आई। बेगूसराय गोलीकांड में बिहार पुलिस को तीन दिन बाद बड़ी सफलता हाथ लगी है। पुलिस ने इस दिल दहला देने वाली वारदात में चारों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। जानकारी के मुताबिक, दो आरोपियों की गिरफ्तारी शुक्रवार सुबह की गई, तो दो को गुरुवार रात गिरफ्तार किया गया था। जानकारी के मुताबिक, शुक्रवार सुबह एक आरोपी को पुलिस ने चलती ट्रेन से गिरफ्तार किया। उसकी पहचान केशव मौर्य के रूप में हुई है। बताया जा रहा है कि वह एक्सप्रेस ट्रेन से सफर कर रहा था। झाझा पुलिस को इसकी सूचना मिली। इसके बाद कार्रवाई करते हुए पुलिस ने आरोपी को धर दबोचा और बेगूसराय पुलिस के हवाले कर दिया। पुलिस के अनुसार चारों आरोपियों की पहचान, युवराज, केशव, अर्जुन और सुमित के रूप में हुई है। आश्चर्यजनक बात यह है कि मोटरसाइकिल पर सवार अपराधी अंधाधुंध गोलीबारी करते हुए कई जिलों की सीमा को पार कर गए, लेकिन पुलिस डर के मारे थाने की कोठरियों में दुबक गई। आगे किसी भी थानों को अलर्ट नहीं किया जा सका। यह पुलिस की सबसे बड़ी लापरवाही थी। अब पुलिस भले अपनी पीठ थपथपा ले, लेकिन अब यह सच सामने आने लगा है कि बिहार में अपराधियों के हौसले एकबार फिर से बुलंद हैं। ऐसी स्थिति में अगर विरोधी बिहार में महाजंगल राज के लौट आने के आरोप लगा रहे हैं तो इसे गलत नहीं कहा जा सकता।

आप अपने विचार अथवा अपनी रचनाएं हमें निम्नलिखित ई–मेल पर भेज सकते हैं–
mithilavarnan@gmail.com, Contact : 9431379234
Join us on /mithilavarnan
Visit us on : www.varnanlive.com
(किसी भी कानूनी विवाद का निबटारा केवल बोकारो कोर्ट में ही होगा।)

तोतेराम की तेरही

-डॉ. सविता मिश्रा मागधी
बेंगलुरू, मो.- 8618093357

(सच्ची घटना पर आधारित)

30 तीस साल, पूरे 30 साल का साथ छोड़ गए थे मिट्ठू राजा। यह भी कोई उम्र थी जाने की। तोते की उम्र तो 50 से 80 वर्ष की होती है। खैर, जाने वाले को कौन रोक सका है। कहने को तो पक्षी था वह, पर था घर का बेटा। चौथी बेटी की छट्ठी के दिन आया था वह। लाने वाले ने बताया था कि वह भी छह दिन का था। उर्मिला ने तो मान लिया था कि उसे जुड़वां बच्चे हुए हैं। एक बेटी और बेटे के रूप में मिट्ठू राजा।

रात में बुआ ने निशा के साथ ही काजल का विधान उसके साथ भी कर दिया था। बड़ी बेटी श्वेता ने दोनों का नामकरण किया, निशी और तोतेराम। सच भी था, उसके आने से बेटे की आशा पूर्ण हो गई थी। निशी झूले में सोती, तोतेराम पिंजड़े में।

निशी से पहले तोताराम बोलना सीख गया था। श्वेता शिल्पा के स्कूल जाते समय पिंजरे में उल्टा लटक उन्हें टाटा बाय बाय करता, 'श्वेता कूल जाओ, शिल्पा कूल जाओ।' नेहा के रोने पर चिल्लाता, 'नेहा को लोटी दो, नेहा को भूख लगी।' निशी के रोने पर कहता, दूध दो निसी रोयी। सतेन्द्र के ऑफिस से आने पर अपना सिर गोल-गोल घुमाकर कहता, छतेन्द्र ऑफिछ आया, चाय दो। बस उर्मिला का नाम नहीं लेता था। उनके लिए मम्मीजी का संबोधन करता था।

पांच साल के बाद एक दिन गलती से उसका पिंजड़ा खुला रह गया था। चुपके से बाहर निकल, तोतेराम ने खुले आकाश में सांसें ली। फिर कभी पिंजड़े में न आने की कसम खा दूर पेड़ पर जा बैठे। जाने कहां से तोतों की जमात आ गई। सभी टें-टें की आवाज में उसे भगाने लगे। अपने स्थान से न हिलने पर अन्य तोते अपनी चोंच से उस पर प्रहार कर बैठे।

तोतेराम अपना बचाव न कर पाए और अर्श से अवनि पर आ गिरे। पास खेल रहे बच्चे उसे उठा अपने घर ले आए। पिंजरे के अभाव में उसे अल्मुनियम के बड़े से पतीले में रख भारी चीज से दबा दिया गया, ताकि वह भाग न पाए।

उधर कोहराम मच गया था। तोतेराम की वापसी के लिए सभी देवी-देवताओं को मनाया जा रहा था। तोतेराम का पिंजड़े से उड़ भागना और गरीब बच्चे द्वारा उसका पकड़े जाना, यह बात जंगल में आग की तरह चारों ओर फैल गई।

चारों बेटियों के साथ सतेन्द्र जी दौड़े-दौड़े तोतेराम की पहचान के लिए गए। उस बालक को कुछ मुद्रा दे अवचेतन अवस्था में तोतेराम को घर ले आए। पानी के छींटे देने पर काफी देर बाद उसे होश आया। पर यह क्या, वह तो अपनी याददाश्त खो चुका था। न किसी से दुआ-सलाम, न नाचना-गाना। दिन भर सिर झुकाए बैठे रहना। चारों बहनें हार गईं उसकी याददाश्त लाने में। सभी ने मान लिया कि अब तोतेराम कभी न बोलेंगे।

छह महीना बाद एक दिन पूजा करती उर्मिला को अपने कानों पर विश्वास न हुआ, जब उन्होंने तोतेराम की आवाज सुनी- 'मम्मी कटोले-कटोले, मिट्ठू कटोले-कटोले।' उनकी आंखों से वात्सल्य-धार बह निकली। समय बीता, चारों लड़कियां पढ़-लिख, जॉब के साथ ससुराल चली गईं। घर में रह गए पति-पत्नी और तोतेराम।

घर के आंगन में एक अमरूद का पेड़ था, जिसपर उसका पिंजड़ा दिनभर टंगा रहता था। उसकी दोस्ती कई पक्षियों से हो गई थी। एक तोती तो जैसे उसपर मर-मिटी थी। एक निश्चित समय पर आती, पिंजरे पर बैठ चोंच से चोंच लड़ाती, अपनी भाषा में घंटों बतियाती और उड़ जाती।

उनकी दोस्ती देख उर्मिला सोचतीं कि तोती को पकड़ पिंजरे में डाल दूं। दो प्रेमी एक हो जाएंगे। सतेंद्र सोचते, पिंजरा खोल तोतेराम को उड़ा दूं। दो प्रेमी का घर बस जाएगा। ये भी अपने बच्चे पैदा कर जिंदगी जी लें, पर दोनों ही अपने मन की न कर पाए।

देखते-देखते सात साल बीत गए। तोती के आने का सिलसिला चलता रहा। फिर जाने क्या हुआ कि तोती ने आना छोड़ दिया। उसके गम में तोतेराम उदास रहने लगे। धीरे-धीरे उसने खाना-पीना छोड़ दिया और अनंत के दिन अनंत यात्रा के लिए कूच कर गया।

सतेंद्र और उर्मिला के लिए यह बहुत बड़ा आघात था। हिन्दू रीति के अनुसार उसका दाह-संस्कार किया गया। पति-पत्नी दोनों ने विचार-विमर्श किया, पितरपक्ष चल रहा है। क्यों न दसवां का क्षौर कर्म कर, तोतेराम की तेरही में पांच ब्राह्मणों को भोजन करा उसे तर्पण दें, ताकि मोक्ष मिल जाए। तेरही के दिन पांच की जगह 11 ब्राह्मणों को जिमाया उनलोगों ने। पास-पड़ोस के कई लोगों ने चुटकी ली, भला कोई पशु-पक्षियों की भी तेरही करता है। पहली बार सुन रहा हूं तोतेराम की तेरही।

(लेखिका वरिष्ठ समीक्षक व स्तंभकार हैं।)

मैं हिन्दी हूं, मैं हिन्द हूं

हिन्दी कविता

आजाद हिन्द देश के है हम,
हिन्दी हमारी पहचान है।
हिन्दी है शान हमारी,
हिन्दी ही अभिमान है।

हिन्दी नहीं तो हम अधूरे,
अधूरी हमारी पहचान है।
अंग्रेजों से तो जीत लिया
पर, उनकी अंग्रेजी पर हर कोई
इतरा रहा है।
अंग्रेजी सब बोल रहे हैं,
हिन्दी बोलने से शर्मा रहा है!

मुझ अकिंचन को मां हिन्दी ने,
अपने आंचल में है पाला।
क्या लिखूं मैं बिन-गड़ा सा,
जिसकी तुलना नहीं, वो वर दे
डाला।

हिन्दी एक दिवस के लिए स्मरण
क्यों
क्या शेष दिन बाधित और
प्रतिबंधित है?
हिन्द की आत्मा है हिन्दी,
नित्य पूजनीय और वंदित है।

- माहीव्रत भास्कर
खड़का (बसंत)
सीतामढ़ी (बिहार)।

राजभाषा सशक्तिकरण को डीवीसी ने बढ़ाए कदम

हिन्दी अत्यंत सुबोध एवं मधुर भाषा है : परियोजना प्रधान

संवाददाता

बोकारो थर्मल : बोकारो थर्मल डीवीसी पावर प्लांट के तकनीकी भवन स्थित सम्मेलन कक्ष में डीवीसी राजभाषा कार्यान्वयन उप समिति के तत्वावधान में हिन्दी पखवाड़ा समारोह का आयोजन बुधवार को किया गया। समारोह का उद्घाटन एचओपी सुशांत सन्निग्रही, सीई ओएंडएम आरआर शर्मा, एसएन प्रसाद, एस. गांगुली, डीजीएम नीरज सिन्हा ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। मौके पर एचओपी ने हिन्दी पखवाड़ा की बधाई देते हुए इस दौरान आयोजित होने वाले विभिन्न राजभाषा कार्यक्रमों की सफलता की कामना करते हुए कहा कि हिन्दी एक मिली-जुली संस्कृति की अत्यंत सुबोध एवं मधुर भाषा है। इसमें भारत के विभिन्न भाषाओं का मिश्रण है। उन्होंने कहा कि राजभाषा हिंदी में सभी भारतीय भाषाएं मुखरित होती है। हम सबकी संवैधानिक जिम्मेदारी है कि हम अपने कार्यालय के प्रत्येक कामकाज में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करें और राजभाषा के प्रचार एवं प्रसार के प्रति सच्चे मन से हमेशा प्रयास करें।

उन्होंने अपील करते हुए कहा कि हम सभी को मिल-जुलकर राजभाषा कार्यान्वयन के लिए भारत सरकार, नराकास और निगम के द्वारा निर्धारित दिशा-निर्देश के अनुरूप हिन्दी को आगे बढ़ाना है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि पखवाड़ा के दौरान आयोजित होने वाले प्रतियोगिताओं में परियोजना के प्रत्येक विभागों से अधिकाधिक संख्या में अधिकारी एवं कर्मचारी सम्मिलित होकर हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं प्रयोग को बढ़ाने का काम करेंगे। समारोह में डीजीएम नीरज सिन्हा ने स्वागत भाषण दिया। सभी तीनों मुख्य अभियंताओं ने भी अपने-अपने विचार रखे। पूरे पखवाड़ा के विस्तृत कार्यक्रमों का विवरण सहायक नियंत्रक दीनानाथ शर्मा ने किया। संचालन दीनानाथ शर्मा एवं धन्यवाद ज्ञापन डीजीएम नीरज सिन्हा ने किया। मौके पर उप निदेशक सह हिन्दी अधिकारी तनीषा सिल्वी, ए अशरफ, तारिक सईद, राजकुमार चौधरी, अभिजीत गोराई, नवीन कुमार पाठक सहित सभी विभागाध्यक्ष, कार्यालय प्रधान, अन्य अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे।

हिन्दी में ही करें कार्यालय के सभी कामकाज : अजय दत्ता

चंद्रपुरा : डीवीसी चंद्रपुरा में राजभाषा कार्यान्वयन उपसमिति द्वारा बुधवार को आयोजित हिन्दी पखवाड़ा समारोह का उद्घाटन मुख्य अभियंता एवं परियोजना प्रधान अजय कुमार दत्ता और मुख्य अभियंता परिचालन सुनील कुमार पांडेय, मुख्य अभियंता पीके मिश्रा ने किया। इस अवसर पर यहां की इकाई 7 - 8 के सम्मेलन कक्ष में आयोजित समारोह में मुख्य अभियंता एवं परियोजना प्रधान श्री दत्ता ने कहा कि कार्यालयीन कार्य हिन्दी में ही करें। उन्होंने उपस्थित डीवीसी के अधिकारियों और कर्मचारियों को राजभाषा प्रतिज्ञा दिलाई। समारोह का संचालन प्रबंधक अनिल कुमार सिंह ने करते हुए हिन्दी की उपयोगिता पर विस्तृत प्रकाश डाला। इस अवसर पर राजभाषा प्रतिज्ञा, राजभाषा पोस्टर का अनावरण एवं राजभाषा स्लोगन डिस्प्ले बोर्ड का उद्घाटन और आशु भाषण प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। समारोह में अपर निदेशक दिलीप कुमार, एके चंद्रशेखर के अलावा संजीव कुमार अमन टोपनो, विजेंद्र हांसदा, सुमन कुमार आदि उपस्थित थे।

कार्यक्रम समारोह के साथ बोकारो महिला समिति का स्थापना दिवस आयोजित

सामाजिक उत्थान में महिलाओं की भूमिका अग्रणी व महत्वपूर्ण: अमरेंदु

संवाददाता

बोकारो : बीएसएल के मानव संसाधन विकास केन्द्र के मुख्य प्रेक्षागृह में बोकारो महिला समिति का स्थापना दिवस समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर बीएसएल के निदेशक प्रभारी अमरेन्दु प्रकाश मुख्य अतिथि रहे। अन्य अतिथियों में संयंत्र के अधिशासी निदेशक एवं मुख्य महाप्रबंधकगण, महिला समिति बोकारो की अध्यक्ष अनीता तिवारी, उपाध्यक्षगण एवं महिला समिति की अन्य सदस्य उपस्थित थे। कार्यक्रम में महिला समिति संचालित स्वावलम्बन, सुरभि, बाल मंदिर, सौरभ शिशु मंदिर के कर्मचारी भी उपस्थित थे।

कार्यक्रम की शुरुआत मुख्य अतिथि एवं विशिष्ठ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुई। इसके पश्चात महिला समिति बोकारो की अध्यक्ष अनीता तिवारी ने सभी आगंतुकों का स्वागत किया और संस्था की गतिविधियों पर प्रकाश डाला।

समारोह में महिला समिति संचालित बाल मंदिर के बच्चों ने मनमोहक अंदाज में गीत व नृत्य प्रस्तुत किया। इसके अलावा सुरभि के कर्मियों द्वारा समूह गान, स्वावलम्बन की टीम द्वारा नृत्य, महिला समिति द्वारा संचालित स्कूलों के बच्चों की प्रस्तुतियां तथा सुरभि एवं स्वावलम्बन के कर्मियों की कला एवं प्रतिभा के प्रदर्शन ने सभी दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। मुख्य अतिथि अमरेन्दु प्रकाश ने अपने संबोधन में नगर की कल्याणकारी संस्था महिला समिति के कार्यकलापों की सराहना करते हुए कहा कि सामाजिक उत्थान के कार्यो में यह संस्था बेहतरीन कार्य कर रही है। समाज के उत्थान में महिलाओं की भागीदारी काफी अहम है।

उन्होंने महिला समिति के योगदान को प्रेरणात्मक बताते हुए उन्हें भविष्य में भी सामाजिक उत्थान के कार्यों को जारी रखने का संदेश दिया। कार्यक्रम के दौरान मुख्य अतिथि ने समिति द्वारा संचालित संस्थाओं के कर्मियों को बेस्ट वर्कर अवार्ड प्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन समिति की कल्चरल सेक्रेटरी श्वेता कुमारी धन्यवाद ज्ञापन समिति की ज्वाइंट सेक्रेटरी वंदना झा ने किया।

दुगार्पूजा को लेकर खादी के कपड़ों पर 25% तक की छूट

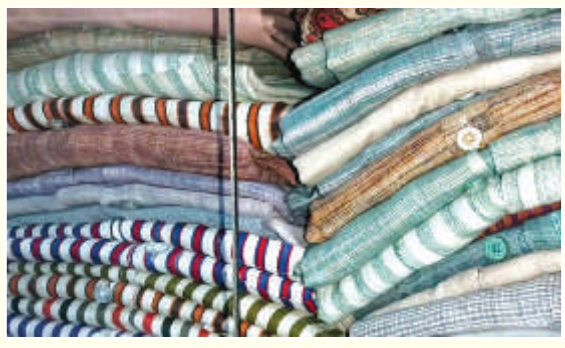

अधिकाधिक लोगों से अवसर का लाभ उठाने की अपील

संवाददाता

बोकारो : झारखंड राज्य खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा दुगार्पूजा के उपलक्ष्य में बोर्ड के सभी बिक्री केंद्रों पर खादी कपड़ों पर विशेष छूट दी जा रही है। बोकारो में सेक्टर- 4 सर्कस मैदान के समीप स्थित झारखंड राज्य खादी एवं ग्रामोद्योग भवन में भी यह सुविधा दी जा रही है। केंद्र के प्रभारी राजेश कुमार झा ने बताया कि दुर्गा पूजा के अवसर पर यहां सभी प्रकार के खादी कपड़ों पर 20 प्रतिशत और रेडीमेड पर 25 फीसदी तक की छूट दी जा रही है 10 सितंबर से शुरू हुई यह छूट आगामी 30 सितंबर तक जारी रहेगी।

उन्होंने बताया कि खादी के अनोखे एवं अत्याधुनिक डिजाइन के उत्पाद यहां के केंद्र में मौजूद हैं। खादी के थान के कपड़ों के साथ कई रेडिमेड कपड़े भी लोगों को मोहित कर रहे हैं। खादी के प्रति बढ़ते रुझान को देखते हुए खादी बोर्ड ने यह ऑफर शुरू किया है और कपड़ों की वेराइटी भी बढ़ा दी है। यह ग्राहकों को बड़ा फायदा पहुंचाने के लिए बोर्ड की महत्वपूर्ण पहल है। राजेश ने कहा कि खादी कपड़ों का निर्माण पूर्णतया स्वदेशी होता है। भारत की खादी की मांग पूरे विश्व में होती है। यह अन्य कपड़ों की तुलना में जहां टिकाऊ और गुणवत्तापूर्ण होता है, वहीं काफी आरामदायक और विशेष आकर्षण भी। उन्होंने अधिकाधिक लोगों से इस अवसर का लाभ उठाए जाने की अपील की है।

डालमिया भारत फाउंडेशन ने एनआईआईटी के साथ किया समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

दीक्षा : 8000 युवा बनाए जाएंगे दक्ष

संवाददाता

बोकारो : डालमिया भारत फाउंडेशन (डीबीएफ), डालमिया भारत ग्रुप की कॉरपोरेट सामाजिक दायित्व शाखा है। यह भारत की आत्मनिर्भरता के दृष्टिकोण को वास्तविकता में बदलने की दिशा में तेजी-से आगे बढ़ रहा है। इस उद्देश्य के लिए डीबीएफ ने एक गैर-लाभकारी शिक्षा समाज एनआईआईटी फाउंडेशन के साथ अत्याधुनिक, समुदाय-केंद्रित कौशल-निर्माण और शैक्षणिक प्रशिक्षण से संबंधित पाठ्यक्रम तैयार करने के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। इसका लाभ झारखंड में बोकारो सहित भारत भर में 16 दीक्षा (डालमिया इंस्टीट्यूट ऑफ नॉलेज ऐंड स्किल हार्नेसिंग) केंद्रों के 8000 वंचित युवाओं को होगा। कम्पनी की ओर से बताया गया कि इस समझौता ज्ञापन का उद्देश्य एक ऐसे नए भारत की शुरूआत करना है, जो

डीबीएफ के मजबूत सामुदायिक जुड़ाव और एनआईआईटी फाउंडेशन की गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक प्रक्रिया की सहयोगी शक्तियों का इस्तेमाल करते हुए प्रगतिशील और आत्मनिर्भर हो, ताकि समाज के वंचित वर्गों के बच्चों और युवाओं को सशक्त बनाया जा सके।

डालमिया भारत लिमिटेड के कार्यकारी निदेशक, ईएसजी और सीआरओ डॉ. अरविंद बोधनकर ने कहा, हमारे सहयोगी प्रयासों और शक्ति के जरिए हम मानते हैं कि यह साझेदारी हमारे देश की बेहतरी के लिए एक महत्वपूर्ण पड़ाव बन जाएगी और समाज में सकारात्मक और परिवर्तनकारी बदलाव लाएगी। हम अपने देश के सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध हैं। भारत को सही मायने में आत्मनिर्भर बनाने के लिए सामाजिक भेदभाव को खत्म करते हुए और अपनी आर्थिक जरूरतों को पूरा करते हुए अपने समुदाय तक अपनी पहुंच बढ़ाने के लिए सैदव तैयार हैं। देश की राजधानी नई दिल्ली में डालमिया भारत लिमिटेड के डॉ. बोधनकर और एनआईआईटी फाउंडेशन की सीओओ सुश्री चारु कपूर के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। इस साझा सहयोग के जरिए शुरू होने वाले प्रमुख प्रशिक्षण और कौशल निर्माण में वित्तीय साक्षरता, साइबर सुरक्षा की आवश्यकताएं और व्यावसायिक कौशल में प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम शामिल होंगे।

झारखंड में बोकारो के अलावा दीक्षा केंद्र जहां पाठ्यक्रम विकसित और संचालित किए जाएंगे, उनमें महाराष्ट्र में कोल्हापुर, गुजरात में खंबालिया, मध्य प्रदेश में सतना, तमिलनाडु में डालमियापुरम और त्रिची, कर्नाटक में बेलगाम और यादवाड, असम में लंका, पश्चिम बंगाल में मेदिनीपुर, ओडिशा में राउरकेला, जाजपुर, राजगांगपुर, सुंदरगढ़, झारसुगुड़ा और कटक तथा उत्तर प्रदेश में सीतापुर और शाहजहांपुर, जहां डालमिया भारत ग्रुप की स्थानीय मौजूदगी है।

भ्रूण-हत्या मुक्त परिवेश बच्चों के समग्र विकास में सहायक : डॉ. प्रभाकर

बोकारो : बाल अधिकार कार्यकर्ता सह मनोवैज्ञानिक डॉ प्रभाकर कुमार द्वारा सेक्टर 4 थानांतर्गत संत रविदास मोड़ स्थित झुग्गी बस्ती के महर्षि रविदास सेवा आश्रम परिसर में बाल अधिकार सरंक्षण जागरुकता अभियान मास्क वितरण के साथ बच्चों संग उनके अभिभावकों माता पिता समुदाय में चलाया गया। डॉ. प्रभाकर ने बच्चे की परिभाषा, बाल अधिकारों, बाल कानून को बतलाते हुए कि बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना की शुरुआत महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा बालिकाओं को सरंक्षण एवं सशक्त करने के लिये 2015 मे निम्न लिंगानुपात वाले सौ जिलों से शुरू की गयी थी। घटता लिंगानुपात एक चिंता का विषय है। विकास के अधिकार का समुचित उपयोग नहीं होने से इसको बढ़ावा मिलता है। उन्होंने कहा कि माता पिता अभिभावकों समुदाय में लड़का लड़की के नाम पर विभेदन नहीं किया जाना चाहिए। भ्रूण-हत्या को उन्होंने सामाजिक कलंक बतलाया। उन्होंने कहा कि बच्चों को सभी तरह के शोषण से बचाने में उनके माता-पिता अभिभावकों की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने बच्चों के संकटकालीन नंबर 1098 के प्रयोग के तरीकों एवं गोपनीयता की बात रखी। अंत में बतलाये गये विषयक से संदर्भित प्रश्न पूछते हुए बच्चों को पुरस्कृत किया गया और स्टेशनरी सामग्री चॉकलेट आदि वितरित कर बच्चों के मनोबल को बढ़ाने का कार्य किया गया। मौके पर शक्ति प्रसाद, सरोज कुमार, अंबिका शर्मा, मनोज शर्मा, अजय यादव, शोभा कुमारी, कसीदा देवी, आरती देवी, बसंती देवी, नीलम पांडे, हिमांशु आदि मौजूद रहे।

मार्गदर्शन स्कूली बच्चों को बताए तनाव-मुक्ति के गुर, विशेषज्ञ ने दीं कई अहम जानकारियां

प्रतिस्पर्द्धा ने कोमल मन पर डाला नकारात्मक प्रभाव : प्राचार्य

संवाददाता

बोकारो : चिन्मय विद्यालय के तपोवन सभागार में जिला मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम, बोकारो के तहत प्रसिद्ध मनोचिकित्सक डॉ. प्रशांत मिश्रा एवं उनकी टीम में शामिल सुषमा कुमारी, छोटेलाल दास के सहयोग से कार्यशाला सह जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय सचिव महेश त्रिपाठी, प्राचार्य सूरज शर्मा एवं डॉ. प्रशांत मिश्रा उनकी टीम ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इस अवसर पर डॉ. मिश्रा ने बच्चों को तनाव से मुक्ति के गुर सिखाए। अतिथियों का स्वागत करते हुए प्राचार्य सूरज शर्मा ने कहा कि हमें हमेशा तनाव मुक्त जीवन जीने का प्रयास करना चाहिये। स्वस्थ मन, स्वस्थ तन से ही जीवन सुखमय रहता है। इसलिए हमें छात्र जीवन में सफलता के लिए अनुशासित रहते हुए शारीरिक एवं मानसिक क्षमता के अनुसार सारे कार्य करने चाहिए। वैश्वीकरण एवं उदारवाद ने केवल और केवल कठोरतम प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा दिया है, जिसका कुत्सित परिणाम बच्चों और युवाओं के कोमल मन पर पड़ रहा है। भाग-दौड़ की जिन्दगी, प्रतियोगिता की चुनौती हतासा और निराशा का सामना करते हुए अधिकांश युवा मानसिक रूप से रूग्ण होते जा रहें हैं और कई बीमारियों का शिकार बन रहे हैं। इस कार्यक्रम में विद्यालय की नवमी, दसवीं एवं ग्यारहवीं कक्षाओं के छात्र- छात्राओं ने भाग लिया।

अनिंद्रा, अकेलापन मानसिक रोग के लक्षण : डॉ. प्रशांत

इस दौरान डॉ. प्रशांत ने मस्तिष्क एवं मानसिक स्वास्थ्य के बारे जानकारी में देते हुए कुछ टिप्स बताये, जिनके उपयोग से हम यह जान सकते हैं कि हम मानसिक रूप से स्वस्थ हैं या नहीं। उन्होने कहा कि अनिंद्रा अत्यधिक चिंता, अकेलापन, चिड़चिड़ापन, बडबड़ाना, अकेले में हंसना, हृदय का धड़कन तेज रहना, अज्ञात भय, मोबाइल के साथ अत्यधिक समय बिताना, नशे का सेवन करना, हमेशा नकारात्मक सोचना आदि मानसिक रोग के लक्षण हैं।

हफ्ते की हलचल

इस्पातनगरी में सोल्लास मनी विश्वकर्मा पूजा

बोकारो : सृजन के देवता देवशिल्पी भगवान विश्वकर्मा की पूजा इस्पातनगरी बोकारो और उद्योगों से भरपूर इस पूरे इलाके में धूमधाम के साथ मनायी गयी। एशिया महादेश के सबसे बड़े इस्पात कारखाने बोकारो स्टील प्लान्ट के साथ-साथ बियाडा व जिले के विभिन्न क्षेत्रों में स्थित तमाम औद्योगिक प्रतिष्ठानों में इसकी धूम मची रही। इस अवसर पर जगह-जगह मेले भी आयोजित किये गये, जिसने इस उत्सव को महोत्सव का रूप दे दिया। औद्योगिक कारखानों के साथ-साथ वाहन-बिक्री के सभी प्रतिष्ठान व गाड़ी-परिचालन करने वाले लोगों के अलावा आमलोगों ने भी पूरे उत्साह के साथ यह वार्षिक पर्व मनाया। सुबह-सुबह से बच्चे-बूढ़े, जवान सभी अपने वाहनों व उपकरणों की साफ-सफाई में जुट गये और उसके बाद विधिवत पूजा संपन्न की। इस अवसर पर तमाम मिठाई दुकानों की चांदी रही। इधर, नगर के सेक्टर-3 स्थित थाना मोड़ में बीएसएल के जलापूर्ति विभाग द्वारा विश्वकर्मा पूजा के उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष की भांति इस बार भी मेला लगाया गया, जहां बच्चों ने जहां मिक्की माउस जॉपिंग झूला, खिलौनों आदि का आनंद उठाया।

डीपीएस बोकारो में हिन्दी पत्रिका 'स्वरा' का विमोचन

बोकारो : राजभाषा हिन्दी के प्रति बच्चों में अपनत्व का भाव विकसित करने के उद्देश्य से डीपीएस बोकारो में हिंदी पखवाड़ा के तहत विद्यालय की वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'स्वरा' का विमोचन किया गया। प्राचार्य ए. एस. गंगवार ने स्वरा का विमोचन किया। उन्होंने पत्रिका के ई-संस्करण का भी अनावरण किया। स्वरा में विद्यालय के शिक्षकों के साथ-साथ छात्र-छात्राओं की काव्य-कृतियों, कहानियों, नारा-लेखन आदि को सचित्र संग्रहित कर सुंदर ढंग से प्रकाशित किया गया है। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि हिन्दी विश्व की समृद्धतम भाषाओं में से एक है। हमें हिन्दीभाषी होने पर गर्व का अनुभव करना चाहिए। यह हिन्दुस्तान की संस्कृति और गौरवशाली परंपरा की पहचान रही है, जिसने राष्ट्रीय एकता व अस्मिता को बनाए रखने में अपनी सशक्त भूमिका निभाई है। इस क्रम में हिन्दी विभाग के शिक्षक-शिक्षिकाओं ने अपनी काव्य-प्रस्तुतियों से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

पोलियोमुक्त देश के निर्माण में सभी दें योगदान : अनिल

बेरमो : जरीडीह बाजार स्थित पोलियो केंद्र संख्या 38 में जीरो से 5 वर्ष के नौनिहालों को दो बूंद पोलियो की खुराक पिलाकर केंद्र का शुभारंभ समाजसेवी सह झामुमो नेता अनिल अग्रवाल ने किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि पोलियो की दवा शून्य से 5 वर्ष के बच्चे को अवश्य पिलाएं, तभी शत-प्रतिशत लक्ष्य हासिल की जा सकती है। झारखंड ही नहीं, पूरे देश से पोलियो मुक्त बनाने के लिए सभी का योगदान जरूरी है। मौके पर पिंकी देवी, बबीता देवी सहित दर्जनों लोग उपस्थित रहे। भारत पोलियो मुक्त अभियान के तहत जिले में विभिन्न पोलियो बूथों पर 1 से 5 वर्ष तक के बच्चों को पोलियो की खुराक दी गई, बेरमो कोयलांचल के विभिन्न बूथों पर भी 1 से 5 वर्ष तक के बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाई गई।

ग्राम गरीबी उन्मूलन योजना को ले मुखियाओं को प्रशिक्षण

गोमिया : गोमिया प्रखंड के मुख्यालय के सभाकक्ष में जेएसएलपीएस के माध्यम विकास पदाधिकारी कपिल कुमार ने प्रखण्ड की सभी 36 पंचायतों के मुखियाओं को ग्राम पंचायत विकास योजना के तहत ग्राम गरीबी उन्मूलन योजना को लेकर को एकदिवसीय प्रशिक्षण दिया। जीपीडीपी के माध्यम से अगले वित्तीय वर्ष के योजनाओं का चयन कैसे किया जाएगा, उसका मुख्य उद्देश्य क्या होना चाहिए, इसके बारे में उन्होंने जानकारी दी। उन्होंने बताया कि अच्छी योजनाओं का पंचायतों में चयन करना और इसका क्रियान्वयन करना जरूरी है, ताकि पंचायतों का सर्वांगीण विकास हो सके। वहीं, जेएसएलपीएस के प्रखंड कार्यक्रम प्रबंधक राहुल केसरी व ब्लॉक एंकर पर्सन सावित्री देवी ने संयुक्त रूप से वीपीआरपी के उद्देश्यों की जानकारियां दीं, जिसमें आजीविका, हकदारी, सामाजिक विकास व सेवाओं पर संपूर्ण जानकारी दी गई। बैठक में मुखिया तेजलाल महतो, महादेव महतो, बबलू हेम्ब्रम, बंटी उरांव, विनोद विश्वकर्मा, रामवृक्ष मुर्मू, वीणा देवी, ममता देवी, मिनी देवी, बलराम रजक, अनारकली, सोनाराम मुर्मू, पूनम देवी, शर्मिला देवी, नमोती देवी, सावित्री देवी, पार्वती देवी, बिंदु देवी, शांति देवी, शोभा देवी सहित सभी जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

जनता से जुड़े मामलों के निष्पादन में तेजी लाएं अधिकारी : डॉ. नीरा

बोकारो में याचिका समिति ने की 45 मामलों की सुनवाई

संवाददाता
बोकारो : बोकारो परिसदन स्थित सभागार में विधानसभा की याचिका समिति ने बैठक की। बैठक की अध्यक्षता याचिका समिति के प्रभारी सभापति कोडरमा विधायक डॉ. नीरा यादव ने किया की। उनके साथ समिति सदस्य गोड्डा विधायक अमित कुमार मंडल एवं ग्लेन जोसेफ गालस्टेन मौजूद थे। प्रभारी सभापति सह कोडरमा विधायक डा. नीरा यादव ने कहा कि जनता से जुड़े जन मुद्दों के निष्पादन में प्रशासनिक अधिकारी तेजी लाएं। आपस में संबंधित विभाग समन्वय बनाकर कार्य निष्पादित करें। इसमें किसी भी तरह की कोई कोताही नहीं हो, इसे सुनिश्चित करें। याचिका समिति ने जिले के विभिन्न विभागों से संबंधित 45 मामलों पर क्रमवार सुनवाई की। तीनों सदस्यों ने विस्तार से सभी मामलों की सुनवाई की, याचिकाकर्ता के आवेदन एवं उनके निष्पादन अथवा अधिकारियों के पक्ष आदि की समीक्षा की। इस दौरान विभिन्न विभागों के पदाधिकारी को कुछ दायर याचिकाओं के संबंध में जांच-पड़ताल कर त्वरित कार्रवाई का निर्देश दिया गया। कई मामलों में एक सप्ताह से लेकर एक माह तक निष्पादन का समय दिया। समिति ने जिले के प्रदर्शन पर संतोष जताया। कोडरमा विधायक डॉ. नीरा यादव एवं गोड्डा विधायक अमित कुमार मंडल ने भी आमजनों से संबंधित कुछ स्थानीय शिकायतों की ओर प्रशासन का ध्यान आकृष्ट कराया। समिति ने जिले में लंबित मामलों का प्रतिवेदन समर्पित करने को निर्देश दिया। साथ ही, राइट टू सर्विस एक्ट के तहत निर्बंधित सेवाओं को ससमय आमजनों को मुहैया कराने पर बल देने का निर्देश दिया। बैठक में डीडीसी कीर्तिश्री जी., अपर समाहर्ता सदात अनवर, चास एसडीओ दिलीप प्रताप सिंह शेखावत, बेरमो एसडीओ अनंत कुमार, जिला भू-अर्जन पदाधिकारी जेम्स सुरीन, विशेष कार्य पदाधिकारी विवेक सुमन, जिला परिवहन पदाधिकारी संजीव कुमार, मुख्यालय डीएसपी मुकेश कुमार, जिला नजारत उप समाहर्ता विवेक सुमन, जिला शिक्षा पदाधिकारी प्रबला खेस, जिला शिक्षा अधीक्षक मो. नूर आलम, आपदा प्रबंधन पदाधिकारी शक्ति कुमार, सामाजिक सुरक्षा के सहायक निदेशक रविशंकर मिश्रा, विद्युत कार्यपालक अभियंता चास एवं तेनुघाट, पदाधिकारी नगर निगम चास आदि संबंधित विभागों के वरीय पदाधिकारी उपस्थित थे। इससे पूर्व, डीसी कुलदीप चौधरी एवं एसपी चंदन झा ने बोकारो परिसदन में विधानसभा याचिका समिति सदस्यों को पुष्पगुच्छ देकर उनका स्वागत किया।

राशि के अभाव में बेहाल हैं गंभीर बीमारियों के मरीज : डॉ. लंबोदर

गोमिया विधायक ने कहा, राशि आवंटन नहीं होने से नहीं मिल रही आवेदनों की स्वीकृति

संवाददाता
बोकारो : आजसू पार्टी के केंद्रीय महासचिव सह- गोमिया के विधायक डॉ लंबोदर महतो ने कहा है कि मुख्यमंत्री गंभीर बीमारी योजना का लाभ आम जनों को नहीं मिल पा रहा है। सैकड़ों आवेदन मुख्यमंत्री गंभीर बीमारी योजना से इलाज कराने के लिए पड़े हुए हैं। इन आवेदनों की स्वीकृति नहीं दी जा रही है। कारण बताया जा रहा है कि पिछले तीन माह से मुख्यमंत्री गंभीर बीमारी योजना का आवंटन नहीं है। उन्होंने इसे लेकर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को पत्र भी लिखा है और उनसे तत्काल जरूरी कदम उठाने का आग्रह भी किया है।

उन्होंने मुख्यमंत्री को इस बात से अवगत कराया है कि बोकारो जिला अंतर्गत उनके विधानसभा क्षेत्र गोमिया के सैकड़ों लोगों ने इलाज को लेकर संबंधित कार्यालय को आवेदन दिया है। जिले के संबंधित पदाधिकारी आवंटन नहीं होने का रोना रो रहे हैं। कई लोग काल के गाल में समा गये हैं। कई लोग इलाज कराने की लेकर इधर-उधर की दौड़ लगा रहे हैं। यह स्थिति कमोबेश पूरे झारखंड की है। कैंसर, हार्ट, किडनी, लीवर ट्रांसप्लांट आदि बीमारी से संबंधित आवेदन लंबित हैं। उन्होंने कहा कि आवेदन की स्वीकृति नहीं होने से लोगों में राज्य सरकार के खिलाफ आक्रोश है। लोगों में सरकार की कार्यशैली की आलोचना हो रही है। राज्य सरकार का संबंधित विभाग भी इस मामले में उदासीन बना हुआ है। मुख्यमंत्री गंभीर बीमारी योजना का हाल बेहाल है।

देवघर में जनता की आवाज बन उभरेगी 'टाइगर फोर्स'

पूर्व जिप उपाध्यक्ष संतोष ने बनाया नया संगठन

थाना, समाहरणालय सहित सभी आवश्यक जगहों पर तैनात रहेंगे फोर्स के जवान

विशेष संवाददाता
देवघर : देवघर के पूर्व जिला परिषद उपाध्यक्ष एवं वरिष्ठ समाजसेवी संतोष पासवान ने क्षेत्र के विकास के उद्देश्य से टाइगर फोर्स का गठन किया। एक सभी में उन्होंने इसकी घोषणा करते हुए कहा कि आज की परिस्थिति में टाइगर फोर्स का गठन क्षेत्र के लिए काफी जरूरी है। सुभाष चौक के समीप ब्लूम डायग्नोस्टिक में बैठक के दौरान उन्होंने इसका ऐलान किया। कहा कि आज युवा नौकरी के लिए दर-दर भटक रहे हैं। शिक्षा और स्वास्थ्य की स्थिति दिनोदिन खराब होती चली जा रही है। लूट मची है। गरीबों को कोई भी देखने वाला नहीं है। ऐसे हालात में पर इन मुद्दों पर मंथन कर लोगों को राहत दिलाने के उद्देश्य से ही उन्होंने टाइगर फोर्स का गठन किए जाने का निर्णय लिया। जरूरतमंद लोगों की मदद के लिए उनका संगठन हमेशा तैयार रहेगा।

एक साल में बनाएंगे एक लाख सदस्य

संतोष ने कहा कि टाइगर फोर्स की ओर से एक साल में लगभग एक लाख सदस्य बनाए जाने का लक्ष्य रखा गया है। संस्था का उद्देश्य आम जनता को समस्याओं से निजात दिलाना है। संगठन का विस्तार कर जनता की आवाज को विधानसभा में उठाना है।

टोल फ्री नंबर जल्द, 24 घंटे में होगा समस्या का समाधान

संतोष ने बताया कि टाइगर फोर्स के हरेक जवान सामाजिक उत्थान करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे। देवघर का सर्वांगीण विकास कैसे हो, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि के क्षेत्र में कैसे हो, इस पर लोगों की मदद की जाएगी। बच्चों को पढ़ाने का भी काम किया जाएगा। टाइगर फोर्स के जवान अस्पतालों, गांवों में, थाना में, एसडीओ ऑफिस, समाहरणालय आदि सहित सभी आवश्यक जगहों पर मुस्तैद रहेंगे। टोल फ्री नंबर जल्द ही जारी किया जाएगा। उस पर शिकायत दर्ज कराने वाले की परेशानियों का समाधान 24 घंटे के भीतर किया जाएगा।

नगर परिषद चुनाव को ले गरमाई पुपरी की सियासत

शहर में अब बदलाव की है बारी : डॉ. सीनू

पुपरी : जनकपुर रोड नगर परिषद चुनाव को लेकर इन दिनों पुपरी और आसपास के क्षेत्र में राजनीति काफी गरमा गई है। सभापति पद के चुनाव के लिए विश्वकर्मा पूजा और एक दिन पूर्व दो दिग्गज दावेदारों- डॉ. सीनू झा और ब्रजेश जालान सहित अन्य ने अपने पर्चे दाखिल किए। दोनों अपने नामांकन में जिस कदर लाव-लश्कर को साथ चल रहे थे, वह चुनाव से पहले शक्ति प्रदर्शन का एक नमूना माना जा रहा है। वर्षों से गांव-देहात के लोगों में निःशुल्क स्वास्थ्य-सेवा प्रदान कर रहीं डॉ. सीनू झा अपने पति खड़का (दक्षिणी) के मुखिया जीतेन्द्र झा के साथ काफिला लेकर नामांकन पर्चा दाखिल करने निकलीं। नामांकन के बाद डॉ. सीनू ने नामांकन यात्रा के दौरान उपस्थित समस्त सहयोगियों व समर्थकों के प्रति आभार जताते हुए इसे सौभाग्य की बात बताया। कहा कि जनकपुर रोड नगर परिषद की जनता का प्यार देख वह अभिभूत हैं। उन्होंने कहा कि यह शहर हमारा है और इसकी जिम्मेदारी भी हमारी है। अब इसे बदलने की बारी है। उन्होंने क्षेत्र के विकास को अपना ध्येय बताते हुए जन-सहयोग इसी प्रकार बनाए रखने की अपील की।

विकास के भविष्य को लेकर सही उम्मीदवार का चयन जरूरी : ब्रजेश

इधर, पुपरी के हर परिवार के विकास के संकल्प के साथ ब्रजेश कुमार जालान ने भी सभापति पद के लिए अपनी उम्मीदवारी पर नामांकन के साथ मुहर लगा दी। उनके नामांकन में भी भारी संख्या में लोगों का हुजूम उड़ा रहा। ब्रजेश ने कहा कि विकास के भविष्य को दांव पर रखना सही नहीं है। सही उम्मीदवार का चयन आवश्यक है।

मिथिला डायरी

अपने मन को सुरक्षा-दुर्ग में रखने वाला ही दुर्गा का सच्चा साधक

- गुरुदेव श्री नंदकिशोर श्रीमाली -

नवरात्रि का शक्ति पर्व आ रहा है। आप सभी को नवरात्रि की अग्रिम शुभकामनाएं। आज मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि इस नवरात्रि में आपको कैसे साधना संपन्न करनी चाहिए और किस प्रकार शक्ति के भाव को, शक्तिपात को अपने भीतर आत्मसात करना है, उसे उतारना है।

दरअसल, शक्ति की चाबी आपके पास है और आप उसे नियंत्रित नहीं कर पा रहे हैं। ऐसा है कि आपके पास खजाना है और आप उस खजाने के उपयोग से वंचित हो। अरे भाई! जीवन में सब कुछ शक्ति से ही प्राप्त होता है। शक्तिहीन और अशक्त व्यक्ति खुद का क्या भला कर सकता है? वह न खुद का और न किसी और का भला कर सकता है।

भावनाएं ही शक्ति का स्रोत

तो, शक्ति का स्रोत क्या है? कहां से निकलती है शक्ति का स्रोत? शक्ति का स्रोत है आपकी भावनाएं, आपका भाव। इन भावनाओं पर आपको सवार होना है, तभी आप अपने जीवन में जो इच्छित है, उसे प्राप्त कर सकते हैं। तो इस नवरात्रि में साधना परम आवश्यक है, क्योंकि शक्ति साधना से ही प्रेरणा प्राप्त होती है, जिससे हम अपने भीतर उठने वाले विविध प्रकार के भावों को समत्व की ओर ले जा सकते हैं।

इस जगत का सीधा-सादा सिद्धांत क्या है? किसी की प्रशंसा करो तो वह प्रसन्न हो जाता है, किसी की निन्दा करो तो वह मायूस हो जाता है, किसी पर क्रोध करो तो वह डर जाता है। ये सब क्रियाएं नहीं हैं, ये सब प्रतिक्रिया है। देश, काल, समाज सब बदल जाए, लेकिन ये प्रतिक्रियाएं वैसी की वैसी ही रहती हैं।

ये मन की भावना है, ये सबको बराबर अनुभव होती है।... और इन मन की भावनाओं से परे कैसे जा सकते हैं? ऐसा है कि जैसे किसी वस्तु को नीचे से ऊपर फेंकते हैं और वह ऊपर ही ऊपर रहे, नीचे गिरे ही नहीं, ऐसा नहीं होता। तो आपकी जो भावनाएं हैं, वे सब प्रतिक्रिया स्वरूप हैं। अब इन भावनाओं को क्रिया कैसे बनाएं? यह संभव है। यह संभव है कि हम नीचे से ऊपर फेंकें और वह ऊपर ही ऊपर गतिशील हो। करना यह है कि हम अपनी भावनाओं, अपनी शक्ति, अपनी ऊर्जा को अपनी एनर्जी बना लें। जैसे गुब्बारा होता है, उसमें हिलियम गैस भर दो आप, अब भले ही उसे नीचे से ऊपर उछाला जाय या ऊपर से नीचे फेंका जाय, वह ऊपर ही ऊपर उड़ता रहता है और पत्थर को ऊपर से नीचे गिरा दो, नीचे से ऊपर फेंक दो, वह तेज गति से वापस नीचे आकर टूट जाता है। तो इसी प्रकार हमारे मन में कई प्रकार की अनावश्यक और अतिरिक्त भावनाएं हैं, उनका बोझ, वो मन को भारी कर देता है। अब भारी है तो नीचे गिरेगा। तो इसलिए भावनाओं के साथ साधक को, मनुष्य को समझदारी भी रखनी है और सावधानी भी रखनी है। एक बाद तो तय है न कि उन्माद, अतिरिक्त उत्साह, क्रोध, भय, इसमें जब हम निर्णय लेते हैं तो वे निर्णय गलत सिद्ध होते हैं।

तो हमें भावनाओं के विज्ञान को समझना पड़ेगा। कैसे करेंगे आप? गाड़ी चलाना सीखते हो, क्या समझाया जाता है- कि क्लच दबाओ, गियर डालो, धीरे-धीरे एक्सीलेटर पर पैर रखो, तीनों का कॉन्बिनेशन रखो, गाड़ी चल जाएगी। उस समय आपको यह नहीं सिखाया जाता है कि क्लच दबाने से गाड़ी के इंजन के अन्दर क्या क्रिया होती है। पर जब क्लच दबाने से यदि कोई आवाज होती है तो उसकी आवाज से आप समझ जाते हो कि गाड़ी के इंजन में कुछ गड़बड़ है।

मन की भावनाओं का नियंत्रण ही अध्यात्म

मन की भावनाओं का नियंत्रण ही अध्यात्म का सीधा अर्थ है। इस सिद्धांत को अपने ऊपर आप लागू कर दो। आप की मनोदशा यह बता देती है कि आपके अंदर कौन सी भावनाएं जागृत हो रही हैं। आपसे अध्यात्म की बात करता हूं तो भाई अध्यात्म का सीधा अर्थ है- अपनी भावनाओं को नियंत्रण में करना। न कि भावनाओं के नियंत्रण में खुद को सौंप देना। यदि आप भावनाओं के प्रभाव में, नियंत्रण में आ गए तो ऐसी स्थिति हो जाएगी कि जैसे आपने अपने अपनी किश्ती तूफान के हवाले कर दी है। अब न आपके हाथ में न पतवार है, न नियंत्रण है। अब सारी जिन्दगी कभी ऊपर, कभी नीचे चलती रहेगी और जो आपका लक्ष्य है, वह तो मिल ही नहीं पाएगा। जो आप करना चाहते हो, कर ही नहीं पाओगे। तो भावनाओं के मनोविज्ञान को समझना जरूरी है। अब इसका ज्ञान हमें कौन देती है? शक्ति! इसलिए प्रार्थना में हम क्या कहते हैं-

या देवी सर्वभूतेषु शक्ति रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।

कि आप सब प्राणियों में शक्ति रूप में हैं और यदि आपने अपनी भावनाओं को तितर-बितर कर दिया कर दिया तो आपकी शक्ति चित्र भीतर से बिखर जाएगी।

अच्छा आप बताओ कि आप अपने जीवन में किसे बचाने के लिए सबसे ज्यादा तत्पर रहते हो? तो सबसे पहले है जीवन, लाइफ, हेल्थ, इसके बाद नंबर आता है धन, आप धन की रक्षा के लिए उसे आलमारी में रखते हो, मजबूत ताला लगाते हो, ताले की चाबी अपने पास रखते हो और फिर यदि आप चाबी किसी और को सौंप दो और कहो कि मेरा धन चोरी हो गया, फिर आपने दूसरों को चाबी देने की बात गलती क्यों की? यह गलती आप लोग कर रहे हो। आप रोज दूसरों को यह अधिकार देते रहते हो कि वह आपकी भावनाओं को प्रभावित करें। इससे नुकसान किसका होगा, आपका ही होगा न?

सबसे बड़ी पूंजी है आपकी भावनाएं

इस जीवन में सबसे बड़ी आपकी पूंजी है आपकी भावनाएं, आपके विचार, आपके भाव, यदि आपने इस पर नियंत्रण किसी और को सौंप दिया तो क्या होगा? कोई आपकी प्रशंसा करेगा, आपको चने के झाड़ पर चढ़ाकर अपना उल्लू सीधा कर लेता है, कोई आपकी निन्दा कर आपसे जरूरत से ज्यादा श्रम करवा लेता है। तो आपको अपने काम को, अपनी स्वयं की कला को सराहने का प्रयास अपने अंदर स्वचालित होना चाहिए। आपने अच्छा काम किया है तो अपने आप को श्रेय दीजिए। दूसरे की निन्दा से क्यों घबराते हो? तो ये जो निन्दा है न, वह शक्तिशाली तलवार की तरह आपके मन को छील देती है।

शब्द! शब्द को इंग्लिश में लिखते हैं- वर्ड। अब वर्ड को अदला-बदली कर दो, उसके अंत में जो एस है, उसे पहले लगा दो, तो क्या हो जाएगा? स्वर्ड, अर्थात- तलवार। तो कोई आपको ऐसे शब्द कहता है, खासकर, उसकी टोन आपकी भावनाओं पर प्रभाव डालते हैं, आपकी भावनाओं को तोड़ देते हैं। ऐसे में आपको अपनी भावनाओं को संतुलित रखना है, बैलेंस्ड रखना है। भावनाओं को संतुलित रखने का तात्पर्य है कि शक्ति की चाबी सदैव अपने पास रखो।

भावनाओं को साधने का अर्थ है मन को साधना

शक्ति साधना का सीधा अर्थ है- भावनाओं पर नियंत्रण। शक्ति का प्रत्येक साधक ये जानता है कि अपनी भावनाओं को साधने का सीधा अर्थ है- अपने मन को साधना। अपने मन को सुरक्षा दुर्ग में रखने वाला ही दुर्गा का सच्चा साधक है। भावनात्मक रूप से आप स्वस्थ रहते हैं, इसका मतलब है- सम का भाव। मन प्रसन्न रहता है। आपकी जो ऊर्जा है, जब मन असंतुलित और स्थिर रहता है तो क्रोध, प्रमाद, उन्माद, सब आपके नियंत्रण में रहता है।

आप आनंद में रहना चाहते हो। इसमें बाधा यह है कि आप समाधान ढूंढना चाहते हो बाहर, लेकिन सब कुछ भीतर है। आपको सबसे अधिक स्वयं की सलाह की जरूरत है। जब भी आपको अपनी भावनाएं विचलित करने लगें, परेशान करने लगें, प्रताड़ित करने लगें तो आप मन की गाड़ी को रोको और शांत चित्त से उन भावनाओं को देखो। आपको हल मिल जाएगा। सबसे बड़ा तनाव भावनाओं का ही तनाव है। यह आपकी प्राणशक्ति को, निष्प्राण कर देगा। हमारी ऊर्जा जीवन के नौ रसों में बंटकर हमारी मनोदशा को प्रभावित करती हैं। जब आप शांत होते हैं, शांति की स्थिति में होते हैं, चिन्ता-मुक्त स्थिति में होने पर मन को आनंद मिलता है। न भविष्य की चिन्ता, न भूत का।

जहां शांति, वहां नवजीवन

संसार। बंधन तो सबको मिलते हैं, सब जानते हैं कि संसार बंधनों का सागर है। इन बंधनों से मुक्ति के लिए शक्ति चाहिए। इसीलिए हम प्रार्थना करते हैं कि हे शक्ति! आप विश्व की पीड़ा का हरण करने वाली हैं। आपको अपनी भावनाओं को सम पर ले जाना है और भावनाओं के सम में आप शांत मन से ही पहुंच सकते हो। जहां शांति होती है, वहां नवजीवन है। वहां न क्रोध है, न भय है, न ही वितृष्णा है और केवल शक्ति का साधक ही अपनी मनः स्थिति को समत्व भाव की ओर ले जा सकता है। क्योंकि, वह शक्ति को अपने मन के, उसके उद्गम स्थल पर जोड़ देता है। जो मन का उद्गम स्थल है, वही शक्ति का स्रोत है। शक्ति स्वयं सिद्धिदात्री हैं। आपके जीवन में कामनाएं प्रकट हो रही हैं तो यह पूर्ण होने के लिए ही प्रकट हो रही हैं। जो साधक हैं, उनके पास मन की शांति है। जो साधक हैं, वे असफलता से हतोत्साहित नहीं होते हैं। वे तो बस क्रियाशील रहते हैं। इस नवरात्रि में आपके जीवन में जो नव रस की धारा बह रही है, इस धारा को बस शक्ति को समर्पित कर दो, आप शांत हो जाएंगे। शांत हो जाएंगे तो और अधिक क्रियाशील हो जाएंगे। इसलिए मैं कहता हूं कि समर्पण में ही आनंद है। शक्ति के प्रति समर्पण में ही आनंद है। विगत को भुला दो। भविष्य की चिन्ता छोड़ दो। वर्तमान में क्रियाशील रहो। भविष्य उज्जवल है।

(साभार : निखिल मंत्र विज्ञान)

पतन या अभ्युदय - निर्णय हमारा

प्रेरक प्रसंग

- बी. कृष्णा नारायण

प्रतियोगी परीक्षा में कुशाग्र का चयन होने से घर में खुशी का माहौल था। इस परीक्षा में मेधा के आधार पर उसका स्थान प्रथम था। सभी की तरफ से बधाई संदेश आ रहे थे। कुशाग्र के दोस्त भी एक-एक कर आ रहे थे और उसे मुबारकबाद दे रहे थे। मां रसोई में कुशाग्र की पसंद का खाना बनाने में लगी थी, साथ में गोसाईं के लिए खीर भी बना रही थी। पिताजी भी अपने बेटे की सफलता से फूले नहीं समा रहे थे। वशिष्ठ बाबू अपने पोते की उपलब्धि पर गदगद भी हो रहे थे। साथ ही साथ कुछ सोच भी रहे थे।

क्या सोच रहे हैं बाबा - नंदी ने पूछा। ज्यादा कुछ नहीं पोतु। जाइये, जाकर कुशाग्र बाबू को मेरे पास लेकर आइये।

जी बाबा, कहकर नंदी जल्दी-जल्दी दौड़कर पहुंची अपने भैया कुशाग्र के पास और बोली - भैया आपको बाबा अभी के अभी बुला रहे हैं।

क्या हो गया? बाबा क्यों अभी के अभी बुला रहे हैं?

हम नहीं जानते हैं, आप खुद जाकर पूछिए।

कुशाग्र अपने दोस्तों से विदा लेकर पहुंचा बाबा के पास।

जी बाबा, हम आ गए। क्या बात हो गयी? सब ठीक तो है न ?

हां बाबू, हा! सब ठीक है।

तो फिर आप जल्दी से हमको बुलाने के लिए क्यों बोले?

वो इसलिए कि अब तुम्हारे जीवन का एक नया अध्याय शुरू होने वाला है। इस अध्याय की शुरुआत शुभ फलदायी हो, तुम्हें समृद्धि प्रदान करने वाली हो, सफलता के सर्वोच्च शिखर तक ले जाने वाली हो और हम सब को गौरवान्वित करने वाली हो। जीवन के कुछ मंत्रात्मक सूत्र, जो इनको हासिल करने में तुम्हारी मदद करेंगी ,उन्हीं सूत्रों को तुम्हें पकड़ाना है।

बस, इसी बात के लिए तुम्हें बुलाया है। अपने दोस्तों को भी यहीं बुला लो। जीवनोपयोगी यह सूत्र उनको भी जानना चाहिए। हम भी जानेंगे बाबा- नंदी ने कहा।

हां पोतु, हां तुमको भी बताएंगे।

कुशाग्र ने अपने दोस्तों को भी वहां बुला लिया।

बाबा को घेरकर सब बैठ गए।

अब जो हम कहेंगे ये मेरे शब्द नहीं हैं। ये श्रीकृष्ण के शब्द हैं, जो उन्होंने अर्जुन से कहे हैं। तुम सब भी इसे न सिर्फ ध्यान से सुनना, बल्कि अपने जीवन में इसे धारण करना। इसको धारण करने से जीवन में कभी तुम पतन के मार्ग पर नहीं जाओगे। सफलता के सर्वोच्च शिखर तक पहुंचोगे।

ध्यायतो विषयान्पुंसः संगस्तेषूपजायते।
संगात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते॥
क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति॥

इसको क्रम से समझो-

1 - **ध्यायतो विषयान्पुंसः** - किसी भी विषय का निरंतर ध्यान करना। विषयों का चिन्तन अर्थात किसी भी विषय, किसी व्यक्ति, किसी वस्तु आदि के बारे में निरंतर सोचना।

2 - **संगस्तेषूपजायते**- विषयों में आसक्ति - निरंतर एक ही दिशा में सोच के प्रवाहित होने से उस वस्तु के प्रति आसक्त हो जाना। काम, वासना से लिप्त हो जाना।

3 - **संगात्संजायते कामः** - विषयों को प्राप्त करने की इच्छा अथवा लालसा- एक बार आसक्ति हो गयी तो फिर उसे पाने की इच्छा या लालसा करना।

4 - **कामात्क्रोधोऽभिजायते**- विषयों की प्राप्ति में किसी भी प्रकार की बाधा आने से क्रोध - इच्छित वस्तु यदि न मिले तो क्रोधित होना, गुस्सा करना।

5 - **क्रोधाद्भवति सम्मोहः** - सम्मोह अर्थात् मूढ़ता - क्रोध की वजह से स्वयं को किस प्रकार व्यक्त करें, यह समझ नहीं आना। स्वयं का विवेक खो देना।

6 - **सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः**:- स्मृतिभ्रम - खुद को व्यक्त न कर पाने से भ्रमित अवस्था को प्राप्त करना।

7 - **स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो- बुद्धिनाश** - पूर्ण रूपेण बुद्धि का नाश अर्थात सही-गलत में भेद करने में अक्षम हो जाना। विवेकशून्य हो जाना। यह अच्छे से जान लो कि बुद्धिहीन मनुष्य पशु से भी बदतर है।

इसके बाद सोचो क्या होगा?

8 - **बुद्धिनाशात्प्रणश्यति**- परिणाम पूरी तरह से पतन होना, मतलब तुम पूरी तरह से नष्ट हो चुके हो।

ये आठ सीढ़ियां हैं। एक-एक कर इन सीढ़ियों के सहारे तुम आगे कदम बढ़ाओगे तो तुम्हें नीचे गिरने से कोई नहीं बचा सकता है। तुम्हारा पतन अवश्यंभावी है।

इसे एक उदाहरण से समझो-

कॉलेज में कोई लड़की तुम्हें अच्छी लगने लगी, सिगरेट पीने की सोच बनने लगी। अब क्या होगा?

अब होगा ये कि इसके बाद तुम दिन-रात उस लड़की की सोच में डूबे रहोगे। अहा... हा.. कितनी सुंदर लड़की है। उसके प्रति तुम्हारी आसक्ति बढ़ने लगेगी, परंतु तुम्हारी इस आसक्ति से बेपरवाह वह लड़की अपनी पढ़ाई में ध्यान दे रही होगी। वह तुम्हारी तरफ देखेगी भी नहीं। सिगरेट पीने की इच्छा तो है, परन्तु कॉलेज कैंपस और छात्रावास में सिगरेट पीने की अनुमति नहीं है। तुम्हारी सोच धीरे-धीरे तुम्हें उनके प्रति तुम्हारी आसक्ति बढ़ाएगी। तुम हर वक़्त यही सोचते रहोगे कि इन्हें किस प्रकार प्राप्त करूं। कोई मौका मिले उस लड़की के नजदीक जाने का, कोई मौका मिले कॉलेज कैंपस के बाहर जाने का, जिससे कि सिगरेट पी सकूं। स्वैच्छित वस्तुओं की प्राप्ति नहीं होने से तुम्हें गुस्सा आने लगेगा। इस वजह से पढ़ाई से तुम्हारा ध्यान भटकेगा। पढ़ाई अरुचिकर लगने लगेगी। कक्षा में शिक्षक जो पढ़ाएंगे, वह तुम्हें कुछ भी समझ में नहीं आएगा। भ्रम और दुविधा की स्थिति में रहोगे।

परिणाम क्या होगा जानते हो?

परीक्षा में असफल होगे। परीक्षा में असफलता का मतलब वहां से आगे बढ़ने का रास्ता बंद। करियर ही सिर्फ बर्बाद नहीं, वरन् स्वयं के जीवन का पूर्ण विनाश। यह याद रखना कि इसकी शुरुआत होती है हमारी सोच से। अपनी सोच को सात्विक रखना होगा। हमारी सोच के पीछे का भाव यदि शुद्ध है, धर्मरक्षित है, तब तो हम आगे की सीढ़ी पर चढ़ने से बच जायेंगे और पतन से भी बच जायेंगे।

पूरे विवेक से इसे समझकर अपने जीवन में आत्मसात करना, जिससे कि जीवन में आने वाले सभी विकारों से बच सको। लड़की के प्रति आकर्षण या सिगरेट पीने की तलब या इसी तरह के किसी अन्य आकर्षण के पीछे भागना तुम्हें कुछ समय के लिए खुशी देगा, यह तो तुम जानते हो, परंतु यह तुम्हारा क्या ले लेगा, यह तुम बिल्कुल भी नहीं जानते। इसलिए कुशाग्र बाबू, जब कभी भी इस प्रकार के विषयों में उलझने लगो तो श्रीकृष्ण के यह अनमोल वचन याद रखना। विषयों में उलझने से बचोगे। अभ्युदय का मार्ग प्रशस्त होगा। निर्णय तुम्हारा कि तुम जीवन में सफलता के सर्वोच्च शिखर पर पहुंचना चाहते हो या पतन के मार्ग पर अग्रसर होना चाहते हो...

बाप रे, कितना बड़ा-बड़ा आप बात बता रहे हैं बाबा?

हमको तो कुछ समझे नहीं आ रहा है।

तनी हमको भी त समझाइए बाबा।

अरे मेरी पोतुआ! ये जो पिछले सप्ताह तुम कह रही थी न कि खुशी के पास जो गुड़िया है, हमको भी वही चाहिए, सेम टू सेम और जब नहीं मिला था, तब तुम क्या की थी... याद है?

हां, बाबा! हम बहुत गुस्सा हो गए थे। अपना सारा खिलौना फेंक दिए थे और कहे थे कि जब तक वैसी गुड़िया नहीं आएगी, हम किसी का कुछ नहीं सुनेंगे..

बस बस बस पोतु।

यही बात हम कुशाग्र बाबू और उनके दोस्तों को समझा रहे हैं कि जीवन में आगे बढ़ना है तो इस प्रकार की सोच और गुस्से से अपने आपको बचाना होगा।

अब समझ में आया कुछ? जी बाबा थोड़ा थोड़ा... नंदी ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।

कुशाग्र और उसके दोस्त बाबा से आत्मसंयम का जीवनोपयोगी महत्वपूर्ण सूत्र पाकर गदगद हुए।

(लेखिका वरिष्ठ ज्योतिषविद और स्तंभकार हैं।)

छात्रों के लिए तकनीकी ज्ञान आवश्यक : अमरदेव

आशा आईटीआई में दीक्षांत समारोह आयोजित, 30 विद्यार्थी हुए सम्मानित

संवाददाता

धनबाद : 'छात्रों के जीवन में तकनीकी ज्ञान परम आवश्यक है। क्योंकि, तकनीकी शिक्षा के माध्यम से ही छात्र अपने जीवन में नई ऊंचाइयों को छू सकते हैं।' उक्त बातें आशा आईटीआई, धनबाद के निदेशक व संस्थापक अमरदेव उपाध्याय ने छात्रों के लिए आयोजित दीक्षांत समारोह में कही।

इस अवसर पर श्री उपाध्याय ने अपने संस्थान से इलेक्ट्रिशियन और फिटर ट्रेड में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले लगभग 30 विद्यार्थियों को प्रमाण-पत्र भी प्रदान किये।

श्री उपाध्याय ने बताया कि जिन छात्रों ने बेहतर प्रदर्शन किए हैं, उन्हें संस्थान की ओर से सम्मानित भी किया गया और इस सफलता के बाद उन्हें रेलवे, इस्पात संयंत्र, विद्युत निगम अथवा अन्य किसी भी सरकारी या गैर सरकारी कंपनियों में नियोजन के अवसर प्राप्त होंगे। उन्होंने वर्ष 2022 की परीक्षा में सफलता प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने कहा कि आशा आईटीआई युवाओं का कौशल निखारकर दशकों से उन्हें स्वावलंबी बनाता आ रहा है। यह क्रम लगातार जारी रहेगा।

1932 आधारित खतियान में हैं विसंगतियां : शिवाशीष

संवाददाता

बोकारो : वरिष्ठ कांग्रेस नेता एवं बिहार सरकार के पूर्व मुख्यमंत्री स्व. बिंदेश्वरी दुबे के दौहित्र शिवाशीष चौबे ने झारखंड कांग्रेस (एआईसीसी) के प्रभारी अविनाश पांडेय से 1932 के खतियान में विसंगतियां दूर करने की मांग की है। उन्होंने इसमें विसंगतियां होने की बात कही है। उन्होंने श्री पांडेय को दिए गए पत्र में 14 सितंबर को झारखंड मंत्रिमंडल द्वारा 1932 खतियान पारित किए जाने पर उनके नेतृत्व के लिए आभार जताया। साथ ही, यह भी कहा कि अति दुखद है की, राज्य की इस स्थानीय नीति की परिभाषा में लगभग 22 साल लग गए, जबकि बिहार में पहले से ही समान मानदंड लागू हैं। उन्होंने कहा कि ग्रामीण विद्वानों और बुद्धिजीवियों के शोध से पता चलता है कि 1932 वर्ष में किए गए सर्वेक्षण के बाद तैयार हुए खेवट-खतियान में अनुचित और अव्यावहारिक कार्यप्रणाली के कारण कई विसंगतियां हैं, जिनको 1908 के सर्वेक्षण के संदर्भ में गहन मूल्यांकन एवं तत्काल सुधार के साथ लागू किया जाना आवश्यक है। अतः, पार्टी को शहरी शिक्षाविदों एवं विद्वानों को तरजीह देने की बजाय इस विषय के संबंध में गहन अध्ययन और समझ रखने वाले ग्रामीण बुद्धिजीवियों और विद्वानों की उचित टीम के चयन में अपनी भूमिका निभानी चाहिए।

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी विजय कुमार झा द्वारा दामिनी प्रिन्टर्स, जेब्री.- 12, सिटी सेन्टर, सेक्टर-4, बोकारो से मुद्रित एवं सेक्टर-3बी/94, बोकारो स्टील सिटी (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक : विजय कुमार झा***
प्रबंध संपादक : **कंचन झा**, दिल्ली ब्यूरो : **श्रवण कुमार झा**, फोन/फैक्स : (06542) 246899, E-mail : mithilavarnan@gmail.com, आरएनआई.पंजीयन संख्या : 48973/89 (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिये जिम्मेवार)

Postal Reg. No.- DNB- 072/2021-23

भारत-उज्बेकिस्तान संबंधों को नया आयाम

प्रधानमंत्री और उज्बेकिस्तान के राष्ट्रपति के बीच द्विपक्षीय बैठक में द्विपक्षीय संबंधों में समग्र प्रगति पर चर्चा

ब्यूरो संवाददाता

नई दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उज्बेकिस्तान के समरकंद में शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के राष्ट्राध्यक्षों की परिषद की 22वीं बैठक के साथ ही दोनों देशों के संबंधों में एक और नया आयाम जुड़ गया। पीएम मोदी ने उज्बेकिस्तान गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम शावकत मिर्जियोयेव से मुलाकात की। पीआईबी सूत्रों के अनुसार द्विपक्षीय राजनयिक संबंधों की स्थापना के 30 साल पूरे होने से यह वर्ष दोनों देशों के लिए खास है। दोनों नेताओं ने दिसंबर 2020 में आयोजित वर्चुअल शिखर सम्मेलन के निर्णयों के कार्यान्वयन सहित द्विपक्षीय संबंधों में समग्र प्रगति की सराहना की।

दोनों नेताओं ने द्विपक्षीय सहयोग के प्राथमिकता वाले क्षेत्रों, विशेष रूप से व्यापार, आर्थिक सहयोग एवं कनेक्टिविटी के मुद्दों पर चर्चा की। दोनों नेताओं ने द्विपक्षीय व्यापार में विविधता लाने और व्यापार एवं निवेश को बढ़ावा देने के लिए दीर्घकालिक व्यवस्था की दिशा में ठोस प्रयास करने की जरूरत पर बल दिया। इस संदर्भ में व्यापारिक संभावनाओं की दृष्टि से चाबहार बंदरगाह और अंतरराष्ट्रीय उत्तर दक्षिण परिवहन गलियारे के अधिक उपयोग सहित कनेक्टिविटी को अहम माना गया।

आईटी, स्वास्थ्य, शिक्षा में सहयोग पर जोर

दोनों नेताओं ने भारत के विकास संबंधी अनुभवों एवं विशेषज्ञता पर आधारित सूचना प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य संबंधी देखभाल, उच्च शिक्षा आदि जैसे क्षेत्रों में सहयोग पर जोर दिया। भारतीय शैक्षणिक संस्थानों के खोले जाने और उज्बेक एवं भारतीय विश्वविद्यालयों के बीच साझेदारी का स्वागत किया गया। अफगानिस्तान सहित क्षेत्रीय मुद्दों पर चर्चा की गई। दोनों नेता इस बात पर एकमत थे कि अफगानिस्तान की धरती का उपयोग आतंकवादी गतिविधियों के लिए नहीं किया जाना चाहिए। दोनों नेताओं ने इस साल जनवरी में आयोजित प्रथम भारत-मध्य एशिया शिखर सम्मेलन के परिणामों को अत्यधिक महत्व दिया। उन्होंने शिखर सम्मेलन के निर्णयों के कार्यान्वयन में हुई प्रगति पर संतोष व्यक्त किया। प्रधानमंत्री ने एससीओ शिखर सम्मेलन के उत्कृष्ट आयोजन और उज्बेकिस्तान की सफल अध्यक्षता के लिए राष्ट्रपति मिर्जियोयेव को बधाई दी।

इधर, पुतिन से भी वार्ता... रूस संग संबंधों पर संतोष

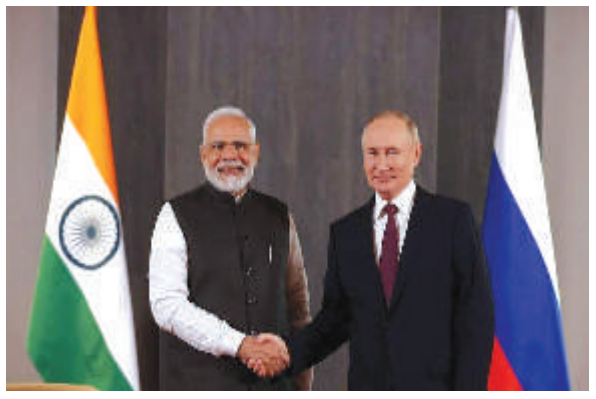

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उज्बेकिस्तान के समरकंद में शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) की 22वीं बैठक के मौके पर रूसी संघ के राष्ट्रपति महामहिम ब्लादिमीर पुतिन से मुलाकात की। दोनों नेताओं ने विभिन्न स्तरों पर संपर्कों सहित द्विपक्षीय संबंधों में निरंतर प्रगति की सराहना की। राष्ट्रपति पुतिन ने इस महीने की शुरुआत में व्लादिवोस्तोक में आयोजित पूर्वी आर्थिक मंच में प्रधानमंत्री के वीडियो-संदेश की सराहना की। दोनों नेताओं ने द्विपक्षीय सहयोग के महत्वपूर्ण मुद्दों के साथ-साथ पारस्परिक हित के क्षेत्रीय एवं वैश्विक मुद्दों पर चर्चा की। वर्तमान भू-राजनैतिक स्थिति से उत्पन्न चुनौतियों के संदर्भ में वैश्विक खाद्य सुरक्षा, ऊर्जा सुरक्षा और उर्वरकों की उपलब्धता पर भी चर्चा हुई।

यूक्रेन के साथ शत्रुता समाप्त करने का फिर आह्वान

पुतिन के साथ बातचीत में यूक्रेन में चल रहे संघर्ष के संदर्भ में, प्रधानमंत्री मोदी ने शत्रुता को शीघ्र समाप्त करने और बातचीत एवं कूटनीति को अपनाने की जरूरत के अपने आह्वान को दोहराया। इस साल, जोकि द्विपक्षीय राजनयिक संबंधों की स्थापना की 75वीं वर्षगांठ का वर्ष है, दोनों नेताओं की यह पहली मुलाकात थी। दोनों नेता एक-दूसरे के साथ संपर्क में बने रहने पर सहमत हुए।